Unit I

वैदिक कालीन शिक्षा या प्राचीन कालीन
[Education in Vedic Period or Ancient Period]

→ वेदों के अनुसार शिक्षा का अर्थ 'ज्ञान की प्राप्ति' है।

वैदिक कालीन शिक्षा के रूप – इसके दो रूप होते है।

(i) परा
(ii) अपरा

परा :— ज्ञान, कर्म, कथा और उपासना द्वारा ब्रह्म सत्य का ज्ञान।

अपरा :— एक सामाजिक शिक्षा

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली :— प्राचीन काल में शिक्षा का प्रचलन बहुत ही कम था। शिक्षा प्रणाली आज से सर्वथा भिन्न थी। शिक्षा की व्यवस्था प्रायः गुरुकुलों में थी। गुरुकुल प्रकृति की गोद में, शांत वातावरण में होते थे। गुरु और शिष्य के सम्बन्ध मधुर थे।

वैदिक कालीन शिक्षा के उद्देश्य :—
[Aim of Vedic System of Education]

(i) चरित्र निर्माण
(ii) व्यक्तित्व का विकास
(iii) ज्ञान का विकास
(iv) सामाजिक कुशलता की उन्नति करना
(v) जीविकोपार्जन की शिक्षा

A Quality Product from Chitra

वैदिक काल में ब्राह्मणों को अध्ययन तथा अध्यापन की शिक्षा दी जाती थी। क्षत्रियों को सैनिक तथा राज-काज की शिक्षा दी जाती थी। वैश्यों को व्यापार तथा खेती-बाड़ी की शिक्षा दी जाती थी। अन्य वर्गों को समाज की सेवा करने की शिक्षा दी जाती थी।

वैदिक कालीन शिक्षा की विशेषताएं :—
[Characteristics of Vedic System of Education]

(i) **उपनयन संस्कार :—** उपनयन का शाब्दिक अर्थ है 'विद्या ग्रहण करने के लिए गुरु के पास ले जाना' होता है। उपनयन विद्यार्थी का दूसरा जन्म माना जाता है। उस दिन बालक विद्या की देवी सरस्वती की विधिवत् वंदना करता था, तत्पश्चात् गुरु बालक को गुरु मंत्र से दीक्षित करते थे।
⇒ उपनयन संस्कार की आयु ब्राह्मण के लिए 8 वर्ष, क्षत्रिय के लिए 11 वर्ष तथा वैश्य के लिए 12 वर्ष निर्धारित थे।

(ii) **शिक्षा का माध्यम :—** प्राचीन या वैदिक काल में शिक्षा का माध्यम देववाणी 'संस्कृत' था।

(iii) **परीक्षा प्रणाली :—** वैदिक काल में परीक्षा प्रणाली मौखिक था।

(iv) **पाठ्यक्रम :—** पाठ्यक्रम विषयों में दर्शन, व्याकरण, ज्योतिष तथा तंत्र विज्ञान आदि को उच्च स्थान प्राप्त था। गुरु

A Quality Product from Chitra

अपने अनुभवों द्वारा छात्र के आचरण तथा व्यवहार को प्रभावित करता था।

अनुशासन :— अनुशासन की व्यवस्था बहुत अच्छी थी। गलती हो जाने पर दण्ड की व्यवस्था थी। आध्यात्मिक उपवास के प्रथा का प्रचलन था।

गुरु-शिष्य सम्बन्ध :— समाज में गुरु का स्थान बहुत ही ऊँचा था। राजा भी उनसे परामर्श लेते थे। छात्र गुरु के प्रति श्रद्धा तथा सेवा भाव रखते थे। गुरु भी अपने शिष्य के प्रति स्नेह रखते थे। गुरु शिष्य के लिए आदर्श का काम करते थे।

स्त्री शिक्षा :— वैदिक काल में स्त्री शिक्षा भी उच्च स्थान पर थी। अदिती, श्रद्धा और विद्योत्मा आदि उच्च शिक्षा प्राप्त नारीयों का उल्लेख प्राचीन ग्रंथों में मिलता है।

गुरुकुल में शिक्षा की अवधि :— २५ वर्ष तक की आयु में गुरु-कुलों में शिक्षा दी जाती थी। २५वें वर्ष में छात्र गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करता था।

⇒ २४ वर्ष तक अध्ययन करने वाले को 'वसु' कहते थे।
⇒ ३६ वर्ष तक अध्ययन करने वाले को 'रुद्र' कहते थे।
⇒ ४८ वर्ष तक अध्ययन करने वाले को 'आदित्य' कहते थे।

A Quality Product from Chitra

समावर्तन संस्कार :– शिक्षा समाप्त होने पर घर लौटने से पूर्व छात्र गुरु द्वारा समावर्तन उपदेश प्राप्त करते थे। गुरु छात्र को सत्य बोलने, धर्माचरण करने स्वअध्ययन करने, धन को दान करने, माता-पिता आचार्य तथा अतिथि का सत्कार करने, महान पुरुष बनने आदि उपदेश देते हुए कहते थे कि "यही वेद और उपनिषद का सार है।"

तत्पश्चात् गुरु शिष्यों को विद्वानों की सभा में ले जाते थे, जहाँ छात्र विद्वानों द्वारा पूछे गये प्रश्नों का उत्तर देकर अपने ज्ञान की यथार्थता का परिचय देता था।

गुरुकुल के अतिरिक्त अन्य शिक्षण संस्थाएं :–

(i) **चरण** – इनमें एक शिक्षक, एक वेद की शिक्षा देता था।

(ii) **घटिका** – इसमें धर्म तथा दर्शन की उच्च शिक्षा कई शिक्षक देते थे।

(iii) **टोल** – एक ही शिक्षक केवल संस्कृत भाषा की शिक्षा देता था।

(iv) **परिषद** – दस या उससे अधिक शिक्षकों की एक परिषद, अनेक विषयों की शिक्षा प्रदान करती थी।

Date 17.06.21

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

A Quality Product from Chitra